Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

वैश्वीकरण के दौर में राजनीति, समाज और मीडिया की भूमिका

मीना चरांदा
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग, कालिन्दी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 34-39
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 10 March 2021
Published : 15 March 2021

सारांश — वैश्वीकरण के दौर में समाज का पिछड़ा वर्ग दलित वर्ग का भी शोषण निरंतर बढ़ता जा रहा है। लोग बदल रहे हैं परन्तु सोच आज भी वहीँ की वहीँ है। उच्च वर्ग यानि (ब्राह्मण) यह सामान्य वस्तुएँ निम्न वर्ग यानि (दलित) तक पहुँचने नहीं देते। छुआछूत जैसे समाज में पिछड़े वर्ग को उठने नहीं दिया जा रहा, माना कि कानूनी रूप में इस समस्या पर निगरानी है, परन्तु शोषण आज भी खत्म नहीं हुआ है। बल्कि कहा तो ये जा सकता है कि हरेक तरह के सामाजिक और आर्थिक शोषण में इस वैश्वीकरण के दौर में वृद्धि ही हुई है.

मुख्य शब्द — वैश्वीकरण, समाज, सामाजिक , आर्थिक, शोषण, मीडिया ।

आज 'भूमंडलीकरण', 'ग्लोबलाइजेशन' और 'वैश्वीकरण' आदि शब्दों की ही गूँज सुनाई पड़ती है। भूमंडलीकरण, ग्लोबलाइजेशन, वैश्वीकरण, जगतीकरण, ग्लोबल विलेज आदि शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द है। इन सभी का एक सामान्य सा अर्थ यह निकलता है कि- पूरा विश्व आज एक गाँव की भाँति प्रतीत होता है। आधुनिक युग में मानव ने अपने परिश्रम के बल पर विज्ञान, जनसंचार, औद्योगिक-क्रांति, संचार के साधनों और सूचना क्रांति के कारण इतना विकास कर लिया है कि उसने सभी देशों की सीमाओं का अतिक्रमण कर दिया है। पारम्परिक रूप से हमारे यहाँ- ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के रूप में यह अवधारणा मानव जाति को इतिहास के साथ चली आई है जिसमें समस्त विश्व की कल्पना एक परिवार के रूप में की गई है।

'भूमंडलीकरण' के वर्तमान इतिहास को विश्व स्तर पर तीन चरणों में बाँटा जा सकता है सन् 1700 से 1914 तक प्रथम चरण, सन् 1914 से 1960 तक द्वितीय चरण तथा तीसरा, 1960 से अब तक का वर्तमान। इस दोरान भूमंलीकरण का प्रथम चरण अंतर्राष्ट्रीयकरण का दौर कहा जा सकता है जिसमें सभ्यताएँ और देश भिन्न-भिन्न कारणों से एक-दूसरे के सम्पर्क में आते हैं। व्यापारिक रास्तों की खोजे होती है। धर्म प्रचार के साथ व्यापारिक और राजनीतिक सक्रियता बढ़ती है। 15वीं सदी में 'केप ऑफ़ गुड होम' से होकर यूरोप से एशिया के रास्ते की खोज मानव सभ्यता के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। यूरोप और एशिया के इस समुद्री रास्ते की खोज के पीछे सभ्यता और धार्मिक प्रेरणा कार्य कर रही थी। इस खोज ने तुरंत व्यापार और वाणिज्य के लिए भी प्रेरित किया।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो. फ्रेड ब्लोक बिल्कुल सही लगते हैं जब कहते हैं कि '12वीं शताब्दी के अमरीका में भूमण्डलीय समाज के सामने उपस्थित दुविधाओं और समस्याओं को समझना 1944 में छपी पोलान्यी की पुस्तक 'द ग्रेट

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ट्रांस्फोर्मेशन: द पोलिटिकल एंड इकोनोमिक्स ओरिजंस ऑफ़ ओवर टाइम' को ध्यान पूर्वक पढ़े बिना संभव नहीं है। पोलान्यी की कृति बाजार आधारित उदारवाद की अनुपम मीमांसा है। वह बहुप्रचलित धारणा को धाराशायी करती है कि राष्ट्र समाज और भूमंडलीकरण अर्थव्यवस्था की संरचना स्वनिर्मित बाजारों के जरिए ही संभव है। 1980 विशेषकर शीत युद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के पतन के बाद बाजार, आधारित, 'उदारवाद' 'थैचरवाद', 'रगिनवाद', 'नवउदारवाद' और 'वाशिंगटन' आमराय के विभिन्न नामों से प्रचलित है। वह भूमंडलीय राजनीति पर पूरी तरह हावी है।'' औद्योगिक क्रांति के तुरंत बाड एडम स्मिथ ने अपनी यह प्रस्थापना रखी कि अगर राज्य अपने को केवल तीन कार्यों (विदेशी शत्रुओं से देश का बचाव, आंतरिक कानून और व्यवस्था बनाए रखना तथा सड़क, अस्पताल, स्कूल आदि सेवाओं को प्रदान करना जिनका उपयोग सब करते हैं, अगर कोई एक व्यक्ति उन्हें प्रदान नहीं कर सकता) तक ही सीमित रखे तथा उन्हीं के लिए करो के जरिए संसाधन जुटाए, तो अर्थव्यवस्था के संचालन और विनियन का शेष कार्य बाजार की शक्तियाँ सुचारू रूप से चलाएंगी. उन्होंने रेखांकित किया कि श्रमिको, तैयार या कच्चे माल के उत्पादकों, दुकानदारों या फिर उपभोक्ताओं का कोई भी संगठन बना तो बाजार की शक्तियों के कार्य में व्यवधान पड़ेगा।

पारिभाषिक तौर पर वैश्वीकरण' का अर्थ है, स्थानीय वस्तुओं या घटनाओं का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रूपान्तरण। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें माना जाता चाय कि पूरे विश्व के लोग मिलकर एक साथ कार्य करते हैं और चर्चा करते हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एकीकरण हो जाता है। चोमस्की का तर्क है कि सैद्धांतिक रूप में वैश्वीकरण शब्द का उपयोग आर्थिक वैश्वीकरण के नव उदारवादी रूप का वर्णन करने में किया जाता है। ऐसे में भूमंडलीकरण का अर्थ हुआ, किसी देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना। भारतीय संदर्भ में भी इसका अर्थ यही होगा कि - विदेशी कम्पनियों को भारत की विभिन्न गतिविधियों में निवेश करने की अनुमति देकर अर्थ-व्यवस्था को विदेशी निवेश के लिए खोल देना। जिसे निजीकरण के नाम से हम सभी जानते हैं.अतः विश्व व्यापार को प्रेरित करने के लिए ऐसे नियमों, सिद्धांतों और संस्थाओं की रचना की जाती है जिनका चरित्र सार्वभौमिक होता है। अतः भूमंडलीकरण का सीधा अर्थ हुआ, विश्व बाजारवाद के आर्थिक नियम और सिद्धांत वैश्विक स्तर पर आरोपित और स्थापित करना.

प्रभाष जोशी भूमंडलीकरण को निजीकरण व उदारीकरण को बढ़ाने वाली प्रवृत्ति के रूप में देखते हैं उनके अनुसार- भूमंडलीकरण की प्रक्रिया अनिवार्य और प्राथमिक रूप से आर्थिक प्रक्रिया है। हमने वे बंधन, मर्यादाएँ और सीमाएँ छोडी, जो हमारी अर्थव्यवस्था को अपना ही बनाए हुए थी, तो इसे उदारीकरण कहा गया और देश के जो उद्योग व्यापार सरकार के नियंत्रण में थे, उनकी मिल्कियत उद्योगपतियों और व्यापारियों को दे दी गई, तो वह निजीकरण कहलाया।

वैश्वीकरण और राजनीति- अधिक राष्ट्रों के रूप में, लोग, और संस्कृतियों बदलते हुए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय, राजनयिकों, राजनेताओं और प्रतिनिधियों के अनुकूल है और राष्ट्रों की जरूरतों और इच्छाओं के अनुसार उनसे मिलना चाहिए। कूटनीति को कई रूपों में उकेरा जा सकता है। शांति वार्ता, लिखित गठन, क्षेत्र के अनुभव आदि के माध्यम से संस्कृति एक परिचित शब्द है और परिभाषा से अपरिवर्तित रहता है। हालांकि वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों ने संस्कृति को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों में लगातार बदल दिया है। वैश्वीकरण से दुनिया भर में प्रौद्योगिकी बढ़ती है और लोकप्रिय उत्पादों के तेज, प्रभावी संचार और खत की पठनीयता होती है। वैश्वीकरण विभिन्न स्तरों पर संस्कृतियों और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को जोड़ता है, अर्थशास्त्र, राजनीतिक, सामाजिक आदि।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों ने अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए वैश्वीकरण का उपयोग किया है। संस्कृतियों को समझना। अंतराष्ट्रीय संबंध इस बात पर ध्यान केन्द्रित करते हैं कि कैसे देश, लोग और संगठन बातचीत करते है और वैश्वीकरण अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर गहरा प्रभाव डाल रहा है।

भौगोलिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सीमाओं को हटाकर वैश्वीकरण, और समय और स्थान के पास से भी, व्यक्तियों, राष्ट्रों, राज्यों और यहाँ तक कि समाजों के सामाजिक-राजनीतिक ढांचे के दृष्टिकोण, व्यवहार और कार्यवाही को बदल दिया है। राजनीति के दायरे में, वैश्वीकरण ने कई विकास पैदा किए है। जिनमें से कुछ इस प्रकार है।

वैश्वीकरण और लोकतंत्र आर्थिक विकास के प्रभाव में एक नए प्रतिमान के रूप में वैश्वीकरण की घटना ने आधी सदी के अतीत से उत्कृष्ट मानव समाजों को बदल दिया है। देर के दशकों में, वैज्ञानिक और अकादमिक समाज, विशेष रूप से राजनीतिक विज्ञान और कुछ अन्य मामले जैसे राजनीतिक प्रणाली, राज्य और लोकतंत्र, वैश्वीकरण द्वारा वैचारिक पुनपरिभाषित किए गए है। लोकतंत्र और भूमंडलीकरण के विषय को लेकर कुछ प्रश्न भी है जैसेः वैश्वीकरण ने लोकतंत्र के किस रूप को प्रभावित किया? क्या लोकतंत्र एक शासन पद्धति के रूप में दौर या क्या लोकतंत्र की विचारधारा या उसकी राजनीतिक संस्कृति वैश्वीकरण से प्रभावित थी?

लोकतंत्र के विभिन्न लक्ष्यों और परिभाषाओं के आधार पर लोकतंत्र के कई विभिन्न मॉडल है। बड़े पैमाने पर प्रयत्क्ष या अप्रत्यक्ष भागीदारी के अनुसार, यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष या सहभागी लोकतंत्र को सीमित करता है। और अर्थव्यवस्था की समानता और समरसता के अनुसार, उदार और सामाजिक लोकतंत्र है और सामाजिक लोकतंत्र औद्योगिक और कॉर्पोरेट लोकतंत्र के लिए है2 और अलग-अलग भौगोलिक दायरे और कई धर्मों और नस्लों के समूहों के अनुसार, अप्रत्यक्ष लोकतंत्र वर्तमान लोकतंत्र और बहुराष्ट्रीय और साहचर्य लोकतंत्र के लिए अक्षम है।

लोकतंत्र की कुछ विशेषताएँ जैसेः-

1. मुक्त चुनावः- इसका अर्थ है कि हर एक ओर समूह को सत्ता तक पहुँचने का मौका मिल सकता हैं यह राजनीतिक प्रणालियों में लोकतंत्र के मूल्यांकन का एक मुख्य सूचकांक हैं।
2. राजनीतिक कार्यों में पार्टियों, राजनीतिक समूहों, सामाजिक दलों की स्वतंत्रता। ‘‘जोसेफ शम्पेटर’’ का मानना है की यह सूचकांक लोकतांत्रिक निर्णय लेने के लिए आवश्यक है।4
3. संविधान का संहिताकरण और उसका सम्मान करना वास्तव में, संविधान उपस्थिति सामान्य इच्छा और लोकतंत्र की गारंटी देता है।5
4. शक्तियों का पृथक्करण और निगरानी।
5. उदारवादी निर्णय लेने की श्ि्क्त का प्रतिनिधित्व करते है। आभ्यावेदन को आंतरिक और बाहरी खतरे और प्रभावों के बिना उदारतापूर्वक निर्णय लेने वाला होना चाहिए।
6. सभी नागरिकों के लिए राजनीतिक और सामाजिक समान अवसर होने चाहिए।

राजनीतिक व्यवस्था और लोकतंत्रीकरण प्रक्रिया की संरचनाओं पर भूमंडलीकरण के प्रभावी होने के बारे में कई तरह के अलग-अलग दृष्टिकोण है। भूमंडलीकरण और लोकतंत्र के कारण जटिल, तरल और सार्वभौमिक अवधारणाएं हैं। कुछ

विचारशील यह तर्क देते हैं कि भूमंडलीकरण विस्फोट करता है। और राष्ट्रीय और सुपरनैशनल स्तर में लोकतंत्र की माप की पुष्टि करता है।6

लेकिन कुछ लोगों का यह कहना है कि भूमंडलीकरण लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया के लिए गंभीर चुनौती है। कुछ विद्वानों का मानना यह भी है कि यह नकारातमक और सकारात्मक प्रभाव हर देश की परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग है और उस देश की स्थिति पर निर्भर करता है।

लोकतंत्र पर वैश्वीकरण का प्रभाव विशेष दायरे तक सीमित नहीं है। कुछ ऐसी विचारशील मान्यताएँ हैं जो, लोकतंत्र के सभी आधारों पर भूमंडलीकरण को प्रभावित करती है जैसे-

1. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
2. विश्वास और धर्म की स्वतंत्रता
3. नागरिक समुदाय
4. नागरिक अधिकार
5. राज्य गतिविधि की परिसीमा
6. राज्यपालों की वैधता
7. प्रेस की स्वतंत्रता आदि।

हम कह सकते हैं कि लोकतंत्र पर भूमंडलीकरण के प्रभावी होने के कुछ तरीके हैं। जैसेः-

1. लोकतंत्र की अवधारणा पर विकासः- लोकतंत्र, भूमंडलीकरण के प्रभाव में, अपनी पारस्परिक अवधारणा के सापेक्ष अधिक बदल गया है। ऐसा कहा जा सकता है कि अपनी नई अवधारणा में लोकतंत्र केवल भागीदारी प्रक्रिया, चुनाव, प्रतिनिधित्व, निम्न का शासन और राजनीतिक और शहरी स्वतंत्रता नहीं है लेकिन लोकतंत्र को इस रूप में परिभाषित किया जाना चाहिए। समाजों में नागरिक संस्थानों के गठन और भूमंडलीय संस्कृति पर इसका समायोजन।7
2. मध्यम वर्ग की वृद्धिः- शहरी संस्थानों, दलों, राष्ट्रीय और सुपरनेचुरल समूहों और आंदोलनों की वृद्धि के द्वारा वैश्वीकरण में वृद्धि हुई और डपककसम ब्सें मध्यम वर्ग का विकास हुआ। मध्यम वर्ग की वृद्धि, विभिन्न और विशाल मांगों को सफेद करना, लोकतंत्र का एक सामाजिक संदर्भ है। अन्यथा, यह लोकतंत्र के गैर-विकास पर हस्ताक्षर करता है।8

इसलिए अपनी उच्च प्रभाव शक्ति के साथ भूमंडलीकरण ने संस्कृति को भी पूरी तरह से प्रभावित किया है और राजनीति में व्यक्तिगत और राज्यों के दायरे तय किए हैं। भूमंडलीकरण ने नए राजनीतिक और सांस्कृतिक कलाकारों का निर्माण भी किया है।

राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्कोप अब दुनिया में दिखाई दिए हैं। भूमंडलीकरण का मानव समाज पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसकी सरल कलपना नहीं करनी चाहिए।

वैश्वीकरण और मीडिया- मीडिया ने हमें सनसनीखेज सुर्खियों का आदि बना दिया है। इतिहास, कला, संस्कृति, राजनीति, घटना आदि सभी क्षेत्रों में सनसनीखेज तत्व हावी हैं. सनसनीखेज सुर्खियाँ जनता के दिमाग पर निरंतर बमबारी कर रहे है। इस

हमले में ज्यादा से ज्यादा सूचनाएं होती है किन्तु इन सूचनाओं की व्याख्या करने और आत्मसात करने की जरूरत में लगातार गिरावट आ रही हैं. आज मीडिया जनता को संप्रेषित की नहीं कर रहा, बल्कि भ्रमित भी कर रहा है। यह कार्य वह अप्रासंगिक बनाकर पुनरावृत्ति और शोर के साथ कर रहा है। बराबर मीडिया से 'क्लिचे' सुन रहे है। इस सबके कारण जहाँ मीडिया संप्रेषित कर रहा है। खास तौर पर टेलीविजन कम से कम सूचना संप्रेषित कर रहा है। स्मृति और घटना के इतिहास से इसका संबंध पूरी तरह टूट चुका है। यह ग्लोबल मीडिया का सामान्य फिनोमिना है। ग्लोबलाइजेशन को प्रभावी बनाने में परिवहन, संचार और साइबरस्पेस की आधुनिक तकनीकों की केन्द्रीय भूमिका रही है। इसके अलावा पर्यटन का तेजी से विकास हुआ है।

विदेशी चैनल्स: भूमंडलीकरण होने से जनसंचार के माध्यमों का विकास दिन-ब-दिन सशक्त होता जा रहा है। आज हमारे देश में अधिक से अधिक चैनल दिखाने की होड़ लगी हुई है। केबल सैंकड़ों की संख्या में चैनल प्रसारित कर रहा है, जिसमें आधे से अधिक चैनल्स विदेशी चैनलस है.

इंटरनेट: इंटरनेट सूचनाओं का मायाजाल है। घर बैठे कम्प्यूटर पर हम किसी भी तरह की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सदियों पहले घटी घटना की खोज कर सकते हैं, वर्तमान होने वाली सभी सूचनाओं को प्राप्त कर सकते हैं। भविष्य-फल जान सकते हैं।

दैनिक समाचार पत्र: विश्व में दैनिक समाचार पत्रों की संख्या लाख के करीब पहुँच चुकी है। भूमंडलीकरण के कारण एक देश का समाचार पत्र अपने देश के अलावा पड़ोसी देश तथा विश्व के दूसरे कोने तक पहुंच जाता है। रेल और हवाई जहाज के माध्यम से नहीं अपितु इन्टरनेट के माध्यम से ही समाचार पत्र और पत्रिकाओं को विश्व के किसी भी कोने तक पहुंचना आज संभव हो गया है।

हाशिए के समाज पर विभिन्न प्रभाव व बदलाव: भारत कभी गाँवों में बसता था, आज शहरीकरण का पर्याय बन उपभोक्तावादी समाज में परिवर्तित हो रहा है. अब गाँव नगर में और नगर महानगरों में परिवर्तित हो रहे हैं. जिनमें बड़ी-बड़ी बहुमंजिला इमारत, शोपिंग कोम्प्लेक्स, मल्टीप्लेक्स, मंहगी शराब, महंगी गाड़िया इत्यादि की वर्चस्वी उपस्थिति आज दृश्य की तरह देखने को मिलती है.किसान व मजदूर वर्ग पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बड़े किसान तो कैसे न कैसे करके अपना जीवनयापन कर लेते हैं, परन्तु छोटे किसान जो बड़े किसानों की जमीन पर खेती कार्यों में मदद करते थे, अब वैश्वीकरण के कारण नष्ट ही हो रहे हैं, क्योंकि 'छोटे किसानों की जगह मशीनों ने ले ली है. जिससे छोटे किसानों के रोजगार पर बड़ी मार पड़ी है.भारतीय संयुक्त परिवार की संस्था भी टूटने लगी है। एकल परिवार प्रणाली और उससे भी बढ़कर (सिंगल) यानि एकल प्रणाली महानगरों में जोर पकड़ने लगी.

उपभोक्तावादी संस्कृति ने सबकुछ भोग लेने की प्रवृत्ति ने स्त्री देह को भी नहीं छोड़ा है। समाज के आरम्भ से ही स्त्री को मात्र भोग्या माना गया है। मीडिया और विज्ञापनों ने स्त्री देह को सिर्फ उपभोग की वस्तु माना है। पैसे का लालच देकर, रोजगार के नाम पर स्त्रियों के साथ बलात्कार जैसे कुकर्म दिनों दिन बढ़ते जा रहे है। निःसंदेह वह दिन दूर नहीं जब यह समाज एक दिन अंधी खाई में गिरेगा। जहाँ विश्व में एक और अरबपतियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, वही दूसरी और भूखे और बेरोजगार लोगों की संख्या भी बहुत बड़ी तेजी से बढ़ी है। वैश्वीकरण के इस दौर में सब कुछ तेजी से बदल रहा है। सब कुछ फास्ट हो रहा है। फास्ट फूड, फास्ट म्यूजिक, फास्ट पैकिंग आदि। वैश्वीकरण के दौर में समाज का पिछड़ा वर्ग दलित वर्ग का भी शोषण निरंतर बढ़ता जा रहा है। लोग बदल रहे हैं परन्तु सोच आज भी वहीँ की वहीँ है। उच्च वर्ग यानि (ब्राह्मण) यह सामान्य वस्तुएँ निम्न वर्ग यानि (दलित) तक पहुँचने नहीं देते। छुआछूत जैसे समाज में पिछड़े वर्ग को उठने नहीं दिया जा रहा, माना कि कानूनी रूप में इस

समस्या पर निगरानी है, परन्तु शोषण आज भी खत्म नहीं हुआ है। बल्कि कहा तो ये जा सकता है कि हरेक तरह के सामाजिक और आर्थिक शोषण में इस वैश्वीकरण के दौर में वृद्धि ही हुई है.

संदर्भ सूची :

1. Sinaei. Vahid, "Cultural Pluralism in Globalization Age", Olome Ejtemaei, No: 25, 2006.
2. Loin. Andre, Discuss and realize of liberal democracy Tehran, Samt press, 2000, pp. 37-59.
3. Bashirieh. Hosein, Democracy lessons for all, Tehran, neghahe Moaser press, 2000, pp. 175-190
4. Mostafa. Rahimi, Tragedy power in shahnameh, Tehran, nilofar press, 1990, p. 256
5. Alam. Abdorahman, Foundation of Political Science, Tehran nilofar press, 1990.
6. Held. David, The transformation of political community, retninking democracy in the centext of globalization, lane shapiro & casian ottaoker coran (eds), Democracy age, Cambridge, polity press, 1999, p. 107
7. Bashirieh, Hosein, Ibid, p. 82
8. www.Ayandeh.nu

सहायक संदर्भ :

1. संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन
2. संस्कृति का अकेलापन, दुर्गाप्रसाद गुप्त, संजय प्रकाशन
3. आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द, बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन
4. भारत का आर्थिक संकट और समाधान, विमल जालान, ने.बु.ट्रे.
5. आधुनिक भारत की द्वन्द कथा, शिवनारायण सिंह अनिवेद,वाणी प्रकाशन
6. भारत में राजनीति कल और आज, रजनी कोठारी, वाणी प्रकाशन
7. रस्साकशी, वीरभारत तलवार,सारांश प्रकाशन
8. हिंसा की सभ्यता, राजकिशोर, वाणी प्रकाशन
9. लोकतंत्र के तलबगार,जावीद आलम,वाणी प्रकाशन
10. आधुनिकता के आईने में दलित ,अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन
11. Agarwal, Shriman Narayan, gandhian Constitution for Free India, Allahabad, Kitabistan, 1946
12. Alexander, Horace, Gandhi Through western Eyes, Bombay: Asian Publishing House, 1969
13. Ashe, Geoffrey, Gandhi: A Study in Revolution, Bombay: Asia Publishing House, 1968
14. Bose, N.K., Gandhiji The Man and His Mission, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay, 1966
15. Dallmayr, Fred, Beyond Orientalism, New York, New York University Press, 1966
16. Dhawan, G.N., Political Philosophy of Gandhi, Bombay, Popular Book Depot, 1946